

## झारखंड मंत्रिमंडल शपथ लेगा

### चर्चा में क्यों?

झारखंड के 12 सदस्यीय मंत्रिमंडल में दस मंत्री **पद की शपथ** लेंगे। शपथ ग्रहण समारोह रांची के राजभवन में होगा।

### प्रमुख बिंदु

- राज्यों में **मंत्रिपरिषद** का गठन और कार्य उसी प्रकार होता है जैसे केंद्र में मंत्रिपरिषद का होता है (**अनुच्छेद 163 और अनुच्छेद 164**)।
- अनुच्छेद 163** में कहा गया है कविकाधीन शर्तों को छोड़कर, **राज्यपाल** को अपने कार्यों के नरिवहन में सहायता और सलाह देने के लिये **मुख्यमंत्री** की अध्यक्षता में एक मंत्रिपरिषद होगी।
  - वविकाधीन शक्तियों में शामिल हैं**
    - राज्य वधान सभा में कसिी भी पारटी को स्पष्ट बहुमत न मलिनने पर मुख्यमंत्री की नयुक्तता
    - अवशिवास प्रसताव** के समय
    - राज्य में संवैधानिक तंत्र की वफिलता के मामले में (**अनुच्छेद 356**)
- संवधान के **अनुच्छेद 164** के तहत **मुख्यमंत्री की नयुक्तता राज्यपाल द्वारा** कसिी की सलाह के बनिा की जाती है। लेकनि वह वयक्तगत मंत्रियों की नयुक्तता **मुख्यमंत्री की सलाह पर** ही करता है।
  - अनुच्छेद का तात्पर्य यह है क राज्पताल अपने वविक के अनुसार कसिी वयक्त को मंत्री नयुक्त नहीं कर सकता। इसलयि राज्पताल कसिी मंत्री को केवल **मुख्यमंत्री की सलाह पर ही बरखास्त** कर सकता है।



## राज्यपाल

**परिचय**

- केंद्र में जिस तरह से राष्ट्र का प्रमुख राष्ट्रपति होता है तथा शासन प्रमुख प्रधानमंत्री, उसी तरह राज्यों में राज्य का प्रमुख राज्यपाल तथा शासन का प्रमुख मुख्यमंत्री होता है।
- राज्यपाल राज्य के मुखिया (मुख्यमंत्री) की सलाह से कार्य करता है।
- संविधान के अनुच्छेद 155 के अंतर्गत राज्यपाल को नियुक्ति राष्ट्रपति करता है।
- संविधान के अनुसार, एक व्यक्ति को दो या दो से अधिक राज्यों का राज्यपाल नियुक्त किया जा सकता है।

**कार्यकाल**

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 156 के अंतर्गत यह प्रावधान किया गया है कि राज्यपाल, राष्ट्रपति के प्रसादपत्र पर धारण करेंगे।
- सामान्यतः राज्यपाल का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है, किंतु इससे पूर्व भी वह राष्ट्रपति को अपना त्यागपत्र देकर सेवा से मुक्त हो सकता है।
- राष्ट्रपति, राज्यपाल को दूसरे कार्यकाल के लिये पुनः नियुक्त कर सकता है। कार्यकाल की समाप्ति के पश्चात् नए राज्यपाल को नियुक्ति तक वह अपने पद पर बना रहता है।

**राज्यपाल पद से संबंधित चुनौतियाँ**

- राज्यपाल को भूमिका राज्य के संवैधानिक प्रमुख से अधिक केंद्र के एजेंट के रूप में परिस्थित होती है।
- ध्यातव्य है कि अनुच्छेद 163 राज्यपाल को शिक्काधिकार की शक्ति प्रदान करता है अर्थात् राज्यपाल स्वयंके संबंधी कार्यों में मंत्रिपरिषद का सुझाव मानने के लिये बाध्य नहीं होगा।
- राज्यपाल को नियुक्ति और उसकी बर्खास्तगी को प्रक्रिया भी अत्यंत विवादस्पद है।
- केंद्र व राज्य में विपरीत सरकारें होने की स्थिति में भी राज्यपाल पद का दुरुपयोग किया जाता है।

**राज्यपालों की भूमिका पर सफितियाँ व आयोग**

केंद्र-राज्य संबंधों पर अब तक तीन आयोग और दो समितियाँ गठित की जा चुकी हैं-

- 1966 में प्रशासनिक सुधार आयोग
- 1969 में राजमन्त्र समिति
- 1970 में भगवान सहाय समिति
- 1988 में सरकारिया आयोग
- 2011 में पुंजी आयोग

**समितियों व आयोगों की अनुशंसाएँ**

- राज्यपाल को नियुक्ति मुख्यमंत्री के परामर्श से हो इसके लिये संविधान के अनुच्छेद 155 में संशोधन किया जाए।
- राज्यपाल द्वारा अपने शिक्के के अभिन प्रयोग को जाने वाली शक्तियों का पर्याप्त स्पष्टीकरण किया जाना चाहिये।
- इस संवैधानिक प्रावधान को तत्काल निरस्त कर देना चाहिये कि मंत्रिपरिषद राज्यपाल के प्रसादपत्र पर धारण करेंगी।
- विधानसभा में यदि किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त न हो तो राज्यपाल को विधानसभा का अधिवेशन बुलाना चाहिये और अधिवेशन में बहुमत से चुने गए व्यक्ति को मुख्यमंत्री नियुक्त करना चाहिये।
- राज्यपाल के पद पर नियुक्त किया जाने वाला व्यक्ति किसी दूसरे राज्य से होना चाहिये।

### योग्यताएँ

- 35 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो।
- किसी राज्य अथवा संघ सरकार के अंतर्गत लाभ का पद न धारण करता हो।
- वह संसद अथवा विधानसभा का सदस्य नहीं होना चाहिये। यद्यपि ऐसा है तो राज्यपाल बनने पर उसी तिथि से उसका संसद अथवा विधानसभा से सदस्यता समाप्त हो जाएगी।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/jharkhand-cabinet-to-take-oath>

